## ११ मुसल

मुसल- यह खदिर काष्ठ का बना बारह अंगुल लम्बा और गोल आकार का होता है।
यव और व्रीहि प्रभृति हविर्द्रव्य का कण्डन इसी से होता है। खादिरं मुसलं कार्यम्।ददे.या.प. पृ-६

## १२ उपयमनी

उपयमनी- जुहू के आकार की और जुहू
से बड़ी स्रुची को उपयमनी कहते हैं। उपयमनीं महावीरम्। दे.या.प. पृ-२६५

## १३ जुहू

जुहू- पलाश काष्ठ की बाहुमात्र लम्बी, आगे की ओर चार
अंगुल गड्ढेवाली, हँसमुखी हवन करने वाली स्रुची है। पालाशी जुहूः। का.श्रौ.सू.-१/३/३५

## १४ उपभृत्

यह अश्वत्थ काष्ठ की बनी एक स्रुची है। इसका आकार और नाप जुहू जैसा ही है।
जुहू का आज्य समाप्त होने पर शेष आहुति के लिए इसमें से जुहू में आज्य लेकर
आहूति दी जाती है। आश्वत्थ्युपभृत् । का.श्रौ.सू.-१/३/३६

## १५ ध्रुवा

ध्रुवा- विकंकत काष्ठनिर्मित मान और आकार में जुहू के समान है। याग के निमित्त इसी में
स्रुवा से आज्य लेकर जुहू में छोड़ते हैं और याग करते हैं। अभिधारणं ध्रुवायाः। का.श्रौ.सू.-१/३/३६

## १६ रौहिणहवणी

रौहिणहवणी- बाहुमात्र लम्बी, गर्तरहित इस स्रुची से रौहिणपुरोडाश
का हवन किया जाता है। यह जुहू के समान आकृतिवाली होती है। रौहिणहवण्यादाय। दे.या.प. पृ-२६८

## १७ मयूख

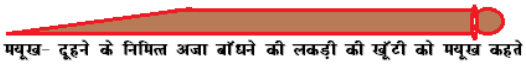

मयूख- दूहने के निमित्त अजा बाँधने की लकड़ी की खूँटी को मयूख कहते हैं। स्थूणा मयूखम्। का.श्रौ.सू.-२६/२/१५

## १८ शम्या

(१) (२)

शम्या- यह वारण काष्ठ का बना एक यज्ञपात्र है। यह आगे
से नुकीली और बारह अंगुल लम्बी होती है। यव या व्रीहि
को पीसने के समय इसे शिला के नीचे रखते हैं। शम्या प्रादेशमात्री। दे.या.प. पृ-७

## १९ इडापात्री

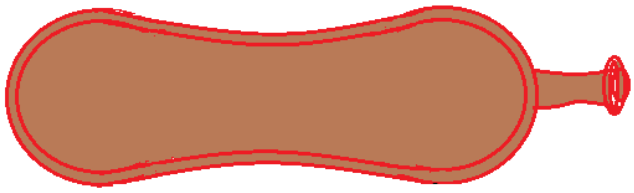

१९ इडापात्री- यह यज्ञपात्र वारण काष्ठ निर्मित, एक अरत्नि लम्बी, छः अंगुल चौड़ी,
बीच में गहरी और कृष्णमध्या होती है। अध्वर्यु पुरोडाश और चरु प्रभृति की आहुति
के अनन्तर शेष हविर्द्रव्य (पुरोडाश) को इसमें रखकर होता को देता है, जिसे
इडोपहूवान के बाद ऋत्विज सहित यजमान भक्षण करते हैं। ''इडापात्री० अरत्निमात्र्यौ
मध्यमंगृहीते''। दे.या.प.- पृष्ठ ७

## २० स्रुव

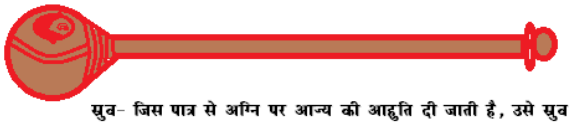

स्रुव- जिस पात्र से अग्नि पर आज्य की आहुति दी जाती है, उसे स्रुव कहते हैं। यह खैर की
की लकड़ी का अरत्निमात्र लम्बा, आगे की ओर अंगुष्ठपर्वमात्र गर्तवाला होता है। खादिरः स्रुवः। का.श्रौ.सू.-१/३/३/४